कार्यालय प्राचार्य, शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चिरमिरी, जिला–कोरिया (छ.ग.)
नैक द्वारा "C" ग्रेड प्रदत्त
Affiliated to Sant Gahira Guru University, Ambikapur Phone No. 07771-265026
Email-govtlahiricollege@gmail.com AISHE: C-9736 Website- www.govtlahiripgcollege.com

AQAR: 2021-22

3.3.3 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during the year

Sl. No.	Contents	Page (From-to)
1	Report of published Book Chapters per teacher	2
2	Scan copy of the Book Chapters	3-21

IQAC Coordinator

IQAC Coordinator
Govt. Lahiri P.G. College, Chirimiri
Distt. - Korlya (C.G.)

Principal

PRINCIPAL
Govt. Lahiri P.G. College
Chirimiri, Distt.- Korea (C.G.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय चिरमिरी जिला–कोरिया (छ.ग.)

नैक द्वारा "C" ग्रेड प्रदत्त

Affiliated to Sant Gahira Guru University, Ambikapur Phone No. 07771-265026

Email-govtlahiricollege@gmail.com AISHE: C-9736 Website- www.govtlahiripgcollege.com

Report of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/international conference proceedings per teacher during the year:-

Session: 2021-22

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Year of publication	ISBN number of the proceeding	Name of the publisher
1	Dr. Aradhana Goswami	Role of Indian English Literature in women empowerment	2021	978-81-952235-0-3	Institute for social development and research, Jharkhand Ranchi
2	Dr. Ram Kinker Pandey	लोक चेतना के प्रखर संवाहक "नागार्जुन"	2022	978-81-951633-6-6	अनंग प्रकाशन, दिल्ली

IQAC Coordinator

IQAC Coordinator
Govt. Lahiri P.G. College, Chirimiri
Distt. - Korlya (C.G.)

Principal

PRINCIPAL
Govt. Lahiri P.G. College
Chirimiri, Distt.- Korea (C.G.)

Women Development

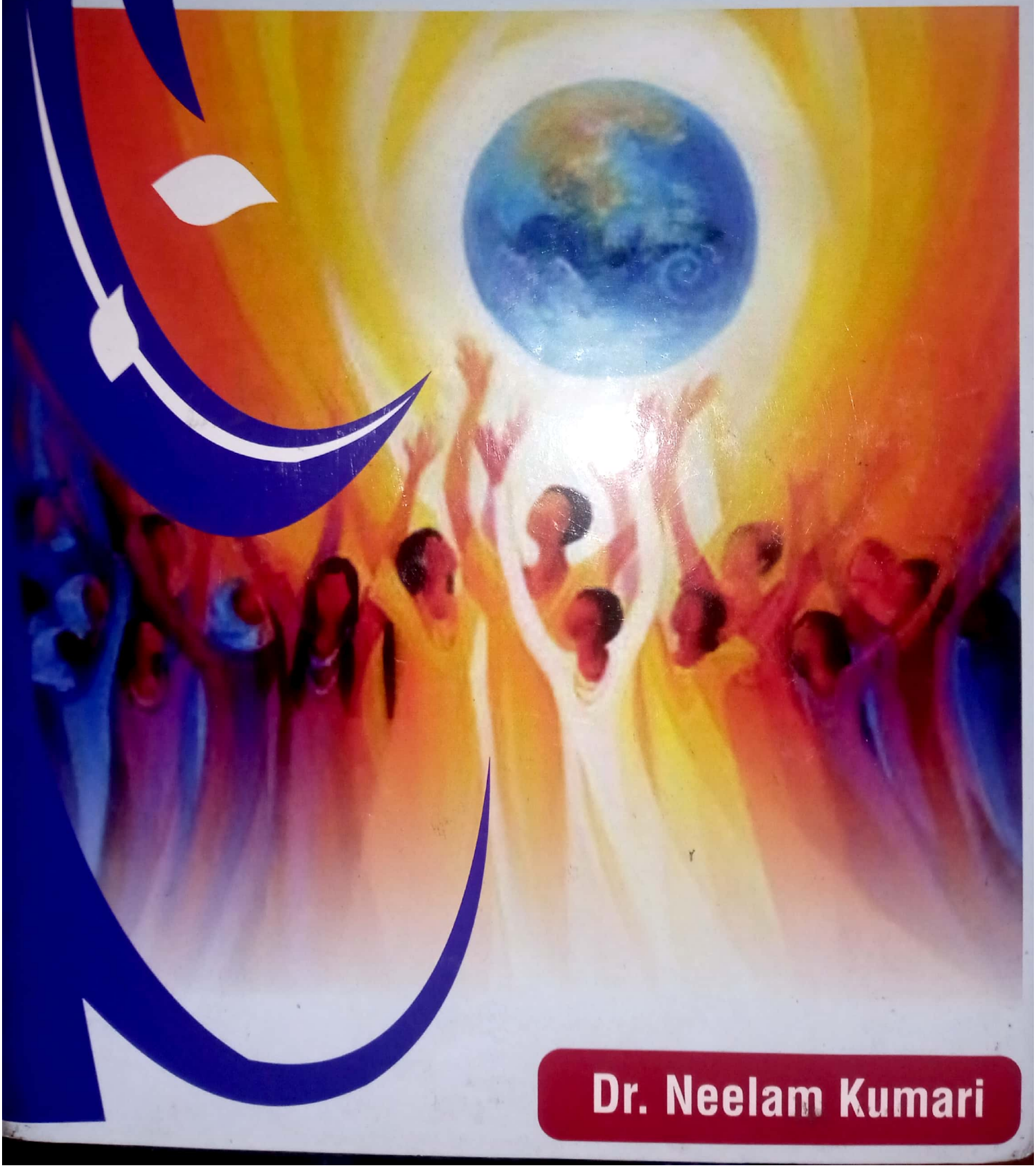

Dr. Neelam Kumari

Scanned by CamScanner

ISBN 978-81-952235-0-3, Women Development, ISDR, Ranchi, India

Women Development

9120

First Edition: 2021

© Institute for Social Development and Research, Ranchi, Jharkhand

☞ No part of this book can be reproduced / reprinted / used without due acknowledgement of the Editor / Publisher.

Publisher:
Institute for Social Development and Research, Ranchi, Jharkhand

ISBN: 978-81-952235-0-3

Price: Rs. 340.00

ISBN 978-81-952235-0-3, Women Development, ISDR, Ranchi, India

Contents

1. Strategies for women's development
-Dr. Neelam Kumari 7
Associate Professor, Dept. of Sociology, R.P.M. College, Patna City, Patna, Bihar

2. From Sudraka's Vasantasena to Bessie Head's Dikeledi: A Journey of 'New' Women from 'Periphery' to 'Centre'
-Hindol Chakraborty 10
Ph. D. Scholar, Dept. of English, Jharkhand Rai University, Ranchi, Jharkhand

3. Role of Indian English Literature in Women Empowerment
-Dr. Aradhana Goswami 18
Assistant Professor, Department of English, Government Lahiri PG College, Chirmiri, Dist. Koriyaa, Chhattisgarh

4. Feminism in USA
-Aparna Sen 24
Researcher, Department of Political Science, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand

5. Role of Education in Women Development
-Nahid Jabeen 30
Research Scholar, Dept. of Geography, Magadh University, Bodhgaya, Gaya, Bihar

6. The Importance of Education in Women Development
-Dr. Sudha Kumari 34
Lecturer & Head, Department of English, S.S.A.M. College, Nawada, Bihar

7. Role of education in women development
-Dr. Dil Mohan Sah 39
Associate Professor, Head, Department of English, R.M.W. College (M.U. Bodh Gaya), Nawada, Bihar

8. Education is the key to Women's Development
-Dr. Pragati 45
Assistant Professor, University Dept. of Home Science, L.N. Mithila University, Darbhanga, Bihar

9. Effects of Dowry on Familial, Educational, Psychological and Social Areas in Bride and her Parents Lives
-Dr. Khusboo Prasad 49
Assistant Teacher (English), R.H.S. Govt. High School, Lakrakhanda, Bokaro, Jharkhand

ISBN 978-81-952235-0-3, Women Development, ISDR, Ranchi, India

Role of Indian English Literature in Women Empowerment

Dr. Aradhana Goswami
Assistant Professor, Department of English, Government Lahiri PG College, Chirmiri, Dist. Koriyaa, Chhattisgarh

Abstract

It is well said that Literature is mirror of society. Women representation in literary texts seems to vary in different ways. Some female characters appear as "commodities" of men's urges and desires, victims of marginalized oppression, and even as the "uneducated and regressive members of society". Through the progress and modernization of literature, women characters break away from these stereotypical representations as they become the powerful and resonating forces in different novels, stories and plays. Even though we, as readers, have our own temporary notions of women representation, it is hard to isolate our own biases on them. Truly, women representations in the field of literature are ambiguous that makes us wonder if these circumstances mirror real life. If we look at Indian English writing we find that author's especially female writers have strongly raised their voices against patriarchal system and exploitation of women in their works.

The present paper aims to focus that Indian women have contributed significantly as equivalent to men authors to the global literature. India's contribution was primarily through the Indian writing in English, with novelists at the forefront in this regard. A number of contemporary scene novelists have expressed their creative urge in no other language than English & credited Indian English fiction as a distinguishing force in world fiction. It assimilates the newly confronted circumstances and the nuanced dilemmas of the modern world. The new English novel shows confidence in dealing with new themes and deals with new techniques and approaches to dealing with these themes.

Key words: *patriarchy, exploitation, contemporary*

In Ancient India, many scriptures had written about the situation of the women, where she enjoyed equal status as that of men. Not only in the sphere of rights but also in the field of education, were

कविता का लोक-पक्ष

संपादक
लक्ष्मीकान्त चंदेला

अनंग प्रकाशन
दिल्ली- 110053

ISBN : 978-81-951633-6-6

मुख्य वितरक
सुबोध प्रकाशन, दिल्ली
subodh.prakashan17@gmail.com

शाखा
अनंग प्रकाशन / ठा. गजराज सिंह, भगतपुर,
पोस्ट - भगतपुर, जिला- अलीगढ़ 203132 (उ.प्र.) भारत

अनंग प्रकाशन

फोन नं. 09350563707, 9540176542

सर्वाधिकार : संपादक

प्रथम संस्करण : 2022
मूल्य : 995 रुपये

ई-मेल : anangprakashan@gmail.com
anangbooks@gmail.com

अनंग प्रकाशन, बी-107/1, गली मन्दिर वाली, समीप रबड़ फैक्ट्री, उत्तरी घोण्डा, दिल्ली-110053, शब्द-संयोजन : सिद्ध-भभूति ग्राफिक्स, दिल्ली- 110053, मुद्रक : राजोरिया प्रिन्टर्स, दिल्ली-32 से मुद्रित।

समर्पण

अपने अपने मन के राजा
और धनीराजा को.....!

भावोद्‌गार

जब अपनी धरती अपने लोग हैं तो समूचा लोक अपना ही हुआ लेकिन कविता में लोक पक्ष खोजने या संजोने का प्रश्न क्यों? निश्चित ही यह आश्चर्यचकित कर देने वाला है किन्तु राजनीतिक टकराहट और सांस्कृतिक द्वन्द्व कहीं-न-कहीं लोक को आहत किए हुए है। लोक पक्षों को हाशिए पर धकेल देने को आमादा है। इतना ही नहीं लोक पक्षधरता के लिए मजबूती से खड़े करते सवालों की पीड़ा गांव के पीछे छूटते जाने, उसके भूगोल बदलते जाने तथा अमानवीय और एकाकी होते जाने की है। बेजा टीसती है बचपन की यादें, उनके तुरंत इतिहास बन जाने से। अब तो दीवारें भी ईंट-पत्थर की हो गई है, भीत मिट्टी की नहीं रही इसलिए व्यक्ति की सोच में ईंट-पत्थर सा हो जाना चिंता का विषय है। जब आचार-विचारगत पार्थक्य बहुत अधिक मात्रा में वर्तमान हों तब कविता लोक जीवन की इन स्मृतियों को जीवन-पर्यन्त बनाए रखने का कारगर उपाय बता रही है।

एक समय था जब मन में, तन में, धरती-आकाश, स्वप्न-संस्कार व सोच-विचार में लोक-ही-लोक था तब आकाश से गंगावतरण की कल्पना साकार हुई थी किन्तु अब लोक से दूर धरती में 'जंग अवतरण' की पूरी चेष्टा की जा रही है और विश्व 'युद्ध' की ओर बढ़ रहा है। 'जंग अवतरण' से बचना है तो मानव को अपने प्रत्येक संस्कारों में, लोक पक्षों को वर्तमान रखने की संकल्पना लेते हुए प्रतिज्ञाबद्ध हो कि विश्व को युद्ध से नहीं शांति से, यंत्र टंकारों से नहीं लोक 'धुनों' से सुसज्जित करें।

फिर आज के युग में युवा पीढ़ी की सक्रियता किसी से छुपी नहीं है परन्तु उसमें विचार-पार्थक्य और विभक्त नैतिकता क्यों? समझ नहीं आ रहा। ऐसे समय में हम आज की तथा आने वाली पीढ़ी के सामने वह बात, तथ्य व सच्चाई

को रखने जा रहे हैं जिसमें पीढ़ियों की सुरक्षा तथा नीरोग जीवन की सुखद-सुफल संभावना निहित है।

एक दिन यह होकर रहेगा कि पीढ़ी पाश्चात्य (सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचार आदि) से ऊब जायेगी, शहरी अभिधानों से जी भर जायेगा तब अपनी जड़ों की लालसा उसे लोक की ओर, माटी की ओर, प्रकृत अवस्था की ओर मोड़ देगी तथा संस्कारित जीवन जी सकेगी। यह दावा नहीं भावोद्‌गार है। इसी के साथ आज की पीढ़ी यह भी निश्चय कर सकेगी कि जीवन, मनुष्य-जीवन बिना लोक व प्रकृत अवस्था के संभव नहीं। लोकोन्मुखता से उसकी विभक्त नैतिकता भी पूर्ववत् हो सकेगी तथा चारित्रिक उत्थान हो सकेगा, विचार साम्य भी हो सकेंगे। इस तरह पुनः धर्म-युग आ जायेगा जिससे मानव-मानव का हितैषी और रखवारा होगा तथा मनुष्य इस भूतल में ही स्वर्ग-सी कल्पना कर सकेगा। मैथिलीशरण गुप्त के राम व वर्तमान गांधी यही कहते रहे हैं-

> ''यहां नहीं मैं स्वर्ग का संदेश लाया
> इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

भूतल को स्वर्ग बनाने की संकलपना और संदेश इसलिए लेकर आये क्योंकि धरती को, समय को पुनः इसकी आन पड़ी है। वर्तमान में आवश्यकता भी है। यदि लोक का प्रत्येक कांतिपुरुष भूतल को स्वर्ग बनाने में अपना योगदान दिया तो जीवन फिर से प्रकृत धर्मों के साथ जी सकेगा तथा सुखमय-निरामय, मूल्य जनित जीवन-संसार होगा।

एक बात और है, जब से मनुष्य लोक व प्रकृत तत्त्वों से दूर हुआ है तब से मूल्य, जीवन का नहीं, वस्तुओं का हो गया है। ऐसे में कविता में अभिव्यक्त लोक-पक्ष जीवन को मूल्य-सापेक्ष बनाने की एकनिष्ठ-साधना है। इसी से जीवन स्तर उठता है। सच्चाई यह भी है कि स्तरीय जीवन का पैमाना आर्थिक सुदृढ़ता को माना जाने लगा है किन्तु मूल्य आधारित जीवन ही स्तरीय जीवन का आधार है, अर्थतंत्र कदापि नहीं। इस तरह जीवन के मानदंड और मापदंड कैसे बदल गये हैं? यक्ष प्रश्न बना हुआ है। इस संबंध में इतना जरूर कहूंगा कि इन सबका कारण लोक से दूर होना है, लोक विमुखता है। जैसे ध्रुव शुक्ल 'बिना धूप का आंगन घर से दूर है' कविता में बता रहे हैं-

''घर ही ऐसी जगह मिला संयोग से
घर ही रोक रहा आंगन की धूप को
धूप देखने घर की चीजें तरस रहीं

बिना धूप का आंगन घर से दूर है।''–उसी शहर में उसका घर, पृ. 135

ऐसे ही शैलेश मटियानी प्रकृत संस्कृति की विस्तृत मर्यादा को रेखांकित करते हुए कह गए कि– ''नदी जब संकरी हो जाती है, तो वेगवान होती जाती है किन्तु जब संस्कृति संकरी होती है, तो बंद गली का रूप अख्तियार करती जाती है और अंततः उसमें उन लोगों का दम घुटने लगता है, जिन्होंने इसकी निर्मिति में अपनी मुक्ति खोजी होती है।'' लेखक और संवेदना, पृ. 84

पहले ही मैं विनम्र अनुरोध कर लिया हूं कि यह दावा नहीं भावोद्‌गार है– 'होनहार विरवान के होत चीकने पात, जिसे लोक में ही ढूंढा जा सकता है, कहीं और नहीं। आज भी प्रतिभाओं की कमी नहीं और न दुर्लभ है। कवि का अपनी मर्यादा में लोक को समक्ष रखना इस बात का साक्षी है। फिर 'कवि कविता भर नहीं लिखता बल्कि लोक पक्षों की इबारत भी लिखना–बतियाना चाहता है। जैसे–

'शब्द के बाद शब्द जोड़ देते हैं
लिखने वाले और लिख देते हैं।'

विश्वनाथ त्रिपाठी 'आखर अनन्त' में लोक पक्षों की इसी मर्यादा को लिख देते हैं, यह कहते हुए कि–

दिखेंगे नागपंचमी के साँप
दशहरे के नीलकंठ
क्वार के खंजन
बस माँ नहीं दिखेंगी
फिर कभी इस रूप में।

और तो और, अब लोकधुनों में गांव की पगडंडियों में गाना बीते दिनों का इतिहास बन गया है। कविता में इन बीते समय को, विलुप्त होती लोकधुनों को बचाना, पीपल की छांव में बतियाना, प्रकृत परिवेश तथा लोक पक्षों का जीवन्त होना है तथा अपनी जड़ों की ओर लौटने का संकेत है। यही मुक्तिबोध की कविता

का लोकपक्ष है तथा नागार्जुन में यही अस्मिता जनपक्ष हो जाती है। सच में अब आदमी लोक का होकर नहीं, अपने में खोकर रह गया है। अपने में खोये हुए को लोकोन्मुख करना कवि ध्रुव शुक्ल की संवेद्य साध है। जैसे-

''कोई इस दुनिया में
होकर रहता है इस दुनिया का।
कोई इस दुनिया में
खोकर रहता है इस दुनिया को।''

जब लोक की ओर जाने की डगर खो गई हो, जीवन में आनंद की लहर उठना बंद हो गई हो, नजरों में धुंधलका-सा छा गया हो, जीवन की राह कठिन और कांटों से भर गए हैं जिससे सूझ नहीं रहा कि जाएं तो जाएं किस ओर? तब कवि 'अली अब्बास 'उम्मीद' मानव का लोक से, प्रकृति से, प्रकृत अवस्था से दूर होते जाने का दर्द बयां करते हुए कहते हैं-

''अब कहां लहर बाबा
खो गई डगर बाबा
... ...
बर्फ बन गई सोचें
बुझ गई नजर बाबा
... ...
रास्तों पे खंजर हैं
जायें अब किधर बाबा।''

दरअसल कुछ तो है जो गायब होता जा रहा है, दूर होता जा रहा है हमसे, छिनता जा रहा है बच्चों से, बिछुड़ रहे हैं उनसे, अलोप हो रहा है नजर से, घट रहा है विचारों से, मिट रहा है जहां से, ऐसा क्यों और कैसे हो रहा है? बेहद चिंता में डाले हुए हैं। जरा-सी भीतरी संवेदना से चिंतन करते हैं तो चारित्रिकता, नैतिकता, मानवीयता, वैयक्तिता सब गायब होते जा रहे हैं। अब तो मनुष्य भी मनुष्य नहीं रहा। मनुष्य स्वयं मनुष्य व मनुष्यता से दूर होता जा रहा है तो फिर वैयक्तिता, नैतिकता, चारित्रिकता की क्या कहें? इसलिए संवेदना से भी कुछ दूर होता जा रहा है जिसकी बिसात पर अभिव्यक्ति का धरातल मजबूत होता था और दृढ़ होते थे व्यक्ति के संकल्प। दरअसल वह था-लोक। इसी से चारित्रिक और

नैतिक संयम को आधार मिलता था, विचारों में प्रवाह और लेखनी में गतिशीलता आती थी व नित नये संसार की संकल्पना हो सृजन होता था, पर अब तो इतना समृद्धशाली परम्पराजड़ित 'लोक' दूर होता जा रहा है। कुछ दूसरे ही संस्कार धारित करते जा रहे हैं। इसी चिंता को 'कविता का लोक पक्ष' शीर्षक से पुस्तक का आकार देकर पाठकों, अध्येताओं के समक्ष लाने की छोटी-सी कोशिश है।

फिर, इन गुमते लोक पक्षों को समेट-सहेजकर पुस्तककार देने की प्रत्याशा लोक सेवा का माध्यम बने, ऐसा प्रयास है। लोक पक्षों को उकेरने में ही हमारी लोक सेवा व लोक साधना है तथा सहजता हमारी, लोक-संस्कारों को धारण करने में। नैतिक बल है लोक की असलियत को बनाये रखने में, और संयम है लेखकों की विचार कड़ियों को शृंखलाबद्ध करने में।

'कविता का लोक पक्ष' शीर्षक से संपादित यह किताब निम्न अध्यायों में वर्गीकृत है-(अ) वसुंधरा पुकारती (ब) आत्मा गांवों में बसती है (स) संस्कारों में जीता है। इस तरह अध्यायों के क्रम निर्धारण का उद्देश्य मेरी छोटी बुद्धि के अनुसार वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए वसुंधरा लोक को अपनी ओर लौटने के लिए पुकार रही है क्योंकि लोक की आत्मा गांवों में बसती है तभी लोक प्रकृत संस्कारों में जी पाता है। पुनश्च, विवेच्य अध्यायों की मूल चिंता मनुष्य का लोक से दूर होते जाने की है। प्रथम अध्याय में भूतल के वैभव के साथ-साथ लोक को वर्तमान रखने की संकल्पना और आह्वान है। दूसरे में, गांव के पीछे छूटते जाने की, क्योंकि लोक की आत्मा गांवों में बसती है। और तीसरा, मनुष्य में विचार पार्थक्य होने की वजह जानना, जो कभी प्रकृत-संस्कारों में जीता था वह अपनी प्रकृत-अवस्था से पृथक क्यों?

इस माध्यम से प्रयास यह भी हुआ है कि लोक की कोई भी प्रकृत प्रथा-परम्परा, संस्कृति, खेल, गीत, नाच, बाजा, आदि को आज की भौतिकवादी भागमभाग की व्यस्त दिनचर्या में स्मृतियाँ बनने से बचाना, या बनकर न रह जाएं। आने वाली पीढ़ी को सचेत करना एवं दायित्व सौंपना भी इसका महत् उद्देश्य है। सच में यह प्रयास 'कालहा बाबा और बसदेवा का अलसभोर में आकर ''खट्टी महेरी सरवन खीर कि अरे मोरे राम'' की अलख जगाना है।

इसी मकसद को लिए 'कविता का लोक-पक्ष' की यात्रा प्रारंभ हुई है। यदि मनुष्य लोक की ओर, अपनी माटी की ओर, गांव की ओर, अपनी जड़ों की

ओर, संस्कारों-परम्पराओं-मान्यताओं की ओर लौट सका, एवं उन्नत जीवन जी सका, अपने नैतिक-चारित्रक विकास के सूत्र पा सका तथा आने वाली पीढ़ी में प्रकृत संस्कारों के बीज बो सका तो विषय की प्रांसगिकता तथा संपादकीय श्रम की सार्थकता सिद्ध हो सकेगी।

निश्चित ही यह लोक मनुष्य की असली जड़ है। इसलिए हमें अपनी जड़ों की ओर लौटना होगा। अत: सुधि अधिकारी विद्वानों के लेख 'कारण और समाधान' खोजते हुए संगत उपाय बता सके हैं। जिससे पुन: मनुष्य अपनी जड़ों की ओर लौट सकेगा तथा आदर्शों का संचयन कर मूल्यों को बचा सकेगा।

अंत में मुक्तिबोध की पंक्तियों का स्मरण 'सामरा' (व्यक्ति जीवन के अवसान के समय तुलसी-पानी पिलाने की लोक मान्यता) की तरह होगा-

'पता नहीं कब, कौन, कहां किस ओर मिले,
किस सांझ मिले, किस सुबह मिले!!
यह राह जिन्दगी
जिससे जिस जगह मिले।'

-डॉ लक्ष्मीकान्त चंदेला

अनुक्रमणिका

भूमिका – भावोद्‌गार ... 5

खण्ड – एक
वसुंधरा पुकारती है

पुकारती है वसुंधरा (ललित निबंध)
– *अवधेश तिवारी* 17

कविता का लोक पक्ष
– *सुरेन्द्र वर्मा* 23

कविता में लोक: एक विचार विश्लेषण
– *डॉ श्रीमती शोभा सिन्हा* 28

स्वातन्त्र्योत्तर कविता में लोकपक्ष : विहंगावलोकन
– *डॉ. मनीषा जैन* 32

कविता और प्रकृति
– *नितिन जैन* 42

अपनी धरती अपने लोग
– *डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला* 47

प्रत्यक्ष– अप्रत्यक्ष का द्वन्द्व
– *डॉ टीकमणि पटवारी* 60

कविताओं का लोक: लोक की कविताएँ
– *गोवर्धन यादव* 68

हिन्दी ग़ज़ल का लोकपक्ष
– *डॉ. जियाउर रहमान जाफरी* 98

खण्ड – दो
आत्मा गांवों में बसती है

लोक के धनीराजा.....
– *बसोरी लाल इनवाती* 109

लोक– रंजन के साधन : लोकक्रीड़ा, लोकबाजी और लोकबाजा
– *सत्येन्द्र कुमार शेन्डे* 122

मालवा के लोक रंगों, लोक कलाओं और लोक संस्कारों में जीवन के विविध पक्ष
– *डॉ. चमन लाल शर्मा* 131

ग्राम्यांचल के दर्पण : गढ़वाली लोकगीत
– *डॉ. डी. सी. पाण्डेय* 139

लोक के समवेत स्वर
– *डॉ. राजेश कुमार ठाकुर* 159

अक्षर– अक्षर में झरते हैं गांव– लोक (समकालीन कविता के संदर्भ में)
– *डॉ. कमलेश व्यास* 172

आत्मा का लोक: गांव
– *डॉ. सागर भनोत्रा* 183

कुछ तो है जो छूटता जा रहा है!
– *डॉ सीमा सूर्यवंशी* 191

धूमिल का गांव: ग्रामीण संस्कारों का मुंह बोलता चित्र
– *डॉ शिव शंकर व्यास* 198

प्रगतिशील कविता में लोक चेतना की अभिव्यक्ति
– *डॉ. विजय कलमधार* 205

भक्तिकाव्य का लोक पक्ष
– *डॉ. रामनाथ झारिया* 211

खण्ड - तीन
संस्कारों में जीता है।

प्रकृति, विकृति और संस्कृति
- डॉ. मनीषा आमटे 219

काव्य का लोक : लोक का आलोक
- प्रो. डॉ. राजन यादव 225

गोबर से गोवर्धन: अंधियारे अंतस् में जगाता आलोक
- डॉ. शशिकान्त चंदेला 245

पहाड़ी संस्कृति के संवाहक हिमाचली लोकगीत
- राजेश कुमार 255

चकगीत: नारी संवेदना की सशक्त अभिव्यक्ति
- डॉ. भाऊ साहेब नवनाथ नवले 260

उत्तर आधुनिकता और आदिवासी कविता का लोक- पक्ष
- डॉ. सीमा चन्द्रन 267

सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन (कविता के विशेष संदर्भ में)
- डॉ लावणो विजय भास्कर 282

'संस्कार बिन जीवन सूना'
- श्रीमती मीनाक्षी कोरी 288

नील परिधान बीच... प्रसाद का लोक- संस्कार
- डॉ. रामेश्वर धुर्वे 297

लोक पक्षधरता के कवि 'अदम गोंडवी'
- डॉ. निर्मल चक्रधर 302

नागार्जुन की कविताओं में लोक
- डॉ. दिग्विजय नरायन 308

निर्मला पुतुल की कविताओं में लोक
- डॉ. रक्षा निकोसे 313

आज की कविता में मानवीयता के स्वर
– *प्रदीप कुमार विश्वकर्मा* 320

चंद्रकांत देवताले की कविताओं में प्रकृत– संस्कार
– *विजय कुमार बसल* 327

लोक चेतना के प्रखर संवाहक 'नागार्जुन'
– *डॉ. राम किंकर पाण्डेय* 331

खण्ड-1

वसुंधरा पुकारती है